

गणित में प्रयोजन विधि एवं कार्यविधि -

- Project Method -

अन्य विषयों की भाँति गणित के क्षेत्र में भी प्रयोजन एक विशेष स्थाप शक्ति है। अब प्रश्न उठता है कि प्रयोजन का क्या अभिप्राय है? किसी भी प्रयोजन में यदि प्रयोग आ जाये तो ऐसी प्रयोजन को प्रयोग प्रयोजन कहते हैं।

गणित शिक्षक परिधि कक्षा में दलों को गिन-गिन प्रकार के प्रश्नों को हल करने की विधियों से अवगत कराता है, परन्तु स्वयं की विषय में प्रगति हेतु वह अधिक गहरी कर सकता है। इस प्रकार शिक्षक स्वयं कक्षा के दलों पर गिन-गिन कठिनाइयों को हल कर सकता है व गिन-गिन प्रकार के प्रयोग कर सकता है और उसके परिणामों के आधार पर अपनी शिक्षण कला में सुधार कर सकता है।

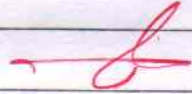
इस प्रकार शिक्षक अपनी कक्षा में अनुसंधान कर सकता है और अपने ज्ञान की वृद्धि कर सकता है। एक विज्ञान शिक्षक को अपने शिक्षण कार्य में गण प्रयोग की गणित सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यदि शिक्षक इन समस्याओं का हल प्रयोग द्वारा कर सके तो पढ़ने को प्रयोग प्रयोजन कहा जाता है। इस प्रकार प्रयोग करने में शिक्षक पूर्ण रूप से स्वतन्त्र होता है और जिस समस्या को सम्मुख रखा प्रयोग करता है वह स्वयं उसकी अपनी कठिनाई होती है। इस कार्य में शिक्षक क्रियाशील रहता है।

प्रयोजन के पद -

1. **प्रस्तावना** - इसके अन्तर्गत जिस समस्या पर कार्य का प्रयोग किया जाता है उसका संक्षिप्त विवरण लिखा जाता है।

2. **शीर्षक** - जिस समस्या पर प्रयोग किया जाता है उसकी स्पष्ट तथा कम शब्दों में लिखा जाता है।

3- सभरसा की व्याख्या - इससे सभरसा की व्याख्या रूपवत्ता
वह जैसे शिक्षक के सम्मुख पैदा हुयी
उसके संक्षिप्त रूप में लिखा जा रहा है।



16/09/2020

प्राचार्य

मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया